ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 201-203**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

ग्रामीण समुदाय के विकास में स्वयं सहायता समूहों का योगदानः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

ज्योतिमा सोनी

समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ0प्र0) भारत

Received-20.05.2026, Revised-28.05.2026, Accepted-05.06.2026, **E-mail:jyotimajyoti91@gmail.com**

सारांशः स्वयं सहायता समूह ग्रामीण समुदायों के विकास की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभरे है। समूह महिलाओं व निम्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले ग्रामीणों के विकास के महत्वपूर्ण साधन के रूप में कार्य कर रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में गुणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोतों के साथ क्षेत्रीय अध्ययन से प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण विषय आधारित दृष्टिकोण से किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि समूहों के माध्यम से महिलाओं में बचत की प्रवृत्ति, वित्तीय समावेशन, आजीविका के अवसर, निर्णय लेने की क्षमता, सामाजिक भागीदारी तथा सामुदायिक सहयोग की भावना के विकास के साथ ही समूहों ने ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक पूंजी के निर्माण, सामूहिक प्रयास एवं जनसहभागिता को बढ़ावा दिया है, परन्तु वित्तीय संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण का अभाव, बाजार तक सीमित पहुंच जैसी चुनौतियां अभी विद्यमान है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह समावेशी एवं सतत् विकास की दिशा में एक प्रभावी माध्यम के रूप में उभरे है, परन्तु समग्र ग्रामीण विकास में अभी पूरी तरह सफल नहीं है।

कुंजीभूत शब्द– स्वयं सहायता समूह, ग्रामीण विकास, महिला सशक्तीकरण, सामाजिक पूंजी, जनसहभागिता, वित्तीय समावेशन, भावना

प्रस्तावना– ग्रामीण समुदाय का विकास वह प्रक्रिया है, जिसमें सामाजिक–आर्थिक विकास के साथ–साथ शैक्षिक व सांस्कृतिक विकास भी शामिल है। यह एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें आर्थिक उन्नति के साथ सामाजिक सहभागिता, आपसी सहयोग की भावना और स्थानीय स्तर पर लोगों की भागीदारी महत्वपूर्ण है। (नाबार्ड, 2023) भारत गाँवों का देश है यहां की लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है इसलिए यहां समाज के विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सामूहित प्रयासों और जन भागीदारी का महत्व अधिक है। इसी संदर्भ में स्वयं सहायता समूह ग्रामीण समुदायों में सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन के महत्वूर्ण माध्यम के रूप में उभरे है। (चैम्बर्स, 1997) स्वयं सहायता समूह लगभग 10 से 20 महिलाओं का समूह होता है जो समान सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से आती है और लघु वित्त के माध्यम से स्वयं सहायता समूह महिलाओं के विकास में एक प्रभावी उपकरण साबित हुआ है। (नाबार्ड, 2023–24) स्वयं सहायता समूह सामूहिक कार्यों के एक प्रभावी मंच है जो इस सिद्धान्त पर काम करते है कि समाज में हाशिए पर स्थित और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों विशेष रूप से महिलाओं को संगठित कर विकास प्रक्रिया में इनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जा सके जिससे न केवल लक्षित विकास को मजबूती मिल सकती है, बल्कि ग्रामीण विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। समय के साथ स्वयं सहायता समूह न केवल बचत और लघु वित तक सीमित है, बल्कि सूक्ष्म उद्यम, कौशल विकास और आजीविका सृजन जैसे क्षेत्रों में भी अपनी भूमिका का विस्तार कर रहे है, साथ ही यह समूह स्वास्थ्य, शिक्षा और पोषण जैसी सार्वजनिक सेवाओं तक पहुंच सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। जलवायु परिवर्तन, चक्रीय अर्थव्यवस्था, अपशिष्ट से सम्पदा जैसी उभरती प्राथमिकताओं और स्थानीय अर्थव्यवस्था को 'वोकल फॉर लोकल' के माध्यम से सशक्त करने के संदर्भ में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका और संभावनाओं को मूल्यांकित करना जरूरी है, क्योंकि इन क्षेत्रों में समूहों का प्रभावी उपयोग समावेशी और सतत् ग्रामीण विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण रणनीतिक कदम साबित हो सकता है। (साहू, 2026)

इस प्रकार स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से ग्रामीण समुदायों में होने वाले सामाजिक–आर्थिक एवं सामुदायिक परिवर्तनों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन करता है और समूहों की भूमिका एवं प्रभावों को समझने के लिए पूर्व में हुए अध्ययनों की समीक्षा प्रस्तुत की गयी है, जो विषयानुसार इस प्रकार हैः

महिला सशक्तीकरण एवं सामाजिक परिवर्तन– स्वयं सहायता समूहों ने आर्थिक विकास के साथ–साथ निर्णय क्षमता, आत्मविश्वास एवं सामाजिक रूप से सशक्त बनाया है इस सन्दर्भ में नायला कबीर (1999) ने अपने अध्ययन में बताया है कि महिला सशक्तीकरण को तीन आयामों–संसाधन, क्षमता और उपलब्धियों के माध्यम से समझा जा सकता है। इनके अनुसार महिलाओं का विकास केवल आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता मात्र से नहीं हो सकता बल्कि उनमें निर्णय लेने की क्षमता का विकास और सामाजिक भागीदारी भी महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं मे होने वाले सामाजिक आर्थिक परिवर्तन में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका को समझने में सहयोग मिला है।

लाहिरी दत्ता एवं सामन्था (2006) ने अपने अध्ययन में बताया है कि स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं में सामाजिक पूंजी का निर्माण करते है और समूह महिलाओं में एक–दूसरे का सहयोग, आपसी विश्वास, सामाजिक नेटवर्क और सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। स्वयं सहायता समूह ग्रामीण समुदायों के विकास में सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण माध्यम बनते है।

देसाई एवं जोशी, (2014) ने अपने अध्ययन में बताया है कि स्वयं सहायता समूहों को समुदाय के विकास के लिए सामूहिक प्रयासों का माध्यम माना गया है और यह भी बताया गया है कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने और उन्हें स्थानीय समस्याओं के समाधान में सामूहिक भूमिका निभाने की क्षमता विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इस सन्दर्भ में प्रस्तुत क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं से बातचीत में यह पाया गया है कि उनमें समूह से जुड़ने के बाद काफी परिवर्तन हुआ है, जिसमें सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन के साथ ही साथ निर्णय क्षमता विकसित हुई है, आत्मविश्वास बढ़ा है और वे अपनी बात निःसंकोच रख पाती है।

आर्थिक विकास और आजीविका– स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं में आय सृजन के साथ ही साथ आजीविका सृजन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। इस संदर्भ में विकास दत्ता (2015) के अध्ययन में यह बताया गया है कि स्वयं सहायता समूहों की भूमिका केवल ऋण उपलब्ध कराने वाली संस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि ग्रामीण विकास के लिए ग्रामीण समुदायों मे सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन में भी महत्वपूर्ण माध्यम बनते है। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से बचत, रोजगार, आय वृद्धि, सामूहिक निर्णय एवं महिलाओं की भागीदारी में भी वृद्धि देखने को मिलती है। इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूहों

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

ने महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों से जोड़कर उनके सामाजिक स्तर और आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायता की है। इस प्रकार निकोलस (2021), ने अपने अध्ययन में बताया है कि स्वयं सहायता समूहो के माध्यम से केवल आर्थिक सहायता ही नहीं मिली है, बल्कि उनमें सामूहिक शक्ति, आत्मविश्वास और समाज में पहचान दिलाने में भी सहयोग किया है। स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने से महिलाओं की निर्णय क्षमता में भी वृद्धि देखने को मिलती है। इसी प्रकार नाबार्ड (2023–24) की रिपोर्ट के अनुसार नाबार्ड ने पूरे भारत मे स्वयं सहायता समूह–बैंक लिंकेज कार्यक्रम को शुरू करने के साथ ही उसे बड़ें पैमाने पर विस्तृत करने का भी काम किया है। स्वयं सहायता समूहों को औपचारिक बैंकिंग संस्थानों से जोड़कर नाबार्ड ने छोटे लोन तक ही पहुंच आसान नहीं की है, बल्कि महिलाओं में बचत की आदत, वित्तीय अनुशासन, सामूहिक जिम्मेदारी और उद्यमिता को बढ़ावा दिया है और समग्र ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। गुरूमूर्ति (2000) अपने अध्ययन में बताते है कि किसी देश की आर्थिक प्रगति चाहें वह विकसित हो या विकासशील, सामाजिक विकास के माध्यम से ही सम्भव हो सकती है। हमारे देश की कुल आबादी में महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग पुरूषों के बराबर है और कुछ क्षेत्रों में ज्यादा भी है। ग्रामीण और सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए अलग–अलग नीतियां बनाते समय महिलाओं के सशक्तीकरण को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता क्योंकि ग्रामीण रोजगार में महिलाओं की भागीदारी के साथ–साथ अपनी उद्यमशीलता के माध्यम से ग्रामीण विकास में अहम भूमिका निभाती है।

सामुदायिक विकास एवं सामाजिक पूंजी– स्वयं सहायता समूह केवल व्यक्तिगत स्तर पर महिलाओं के विकास की बात नहीं करते बल्कि ग्रामीण समुदायों में सामूहिक भागीदारी को बढ़ाने, एकजुट होकर काम करने व ग्रामीण विकास में सहयोग करते है। इस संदर्भ में रॉय एवं प्रसाद (2014) ने अपने अध्ययन में ग्रामीण स्तर पर स्वयं सहायता समूहों की कार्यप्रणाली एवं प्रभाव का मूल्यांकन किया है। इनके अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह जानना था कि स्वयं सहायता समूह ग्रामीण समुदायों विशेष रूप से महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक जीवन में किस तरह बदलाव ला रहे हैं। अध्ययन से यह भी पता चलता है कि स्वयं सहायता समूहों ने ग्रामीण महिलाओं में बचत की प्रवृत्ति, ऋण तक पहुँच, आय सृजन के अवसर तथा निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाया है साथ ही साथ स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं में सामूहिक भावना, सहयोग और सामाजिक भागीदारी को भी मजबूत किया है। इस अध्ययन से यह भी पता चला कि स्वयं सहायता समूहों के प्रभावी संचालन में कुछ चुनौतियां भी हैं जिनमें प्रशिक्षण की कमी, बाजार की उपलब्धता व संस्थागत सहयोग की कमी देखने को मिली है। इसी सन्दर्भ में पी.आई.बी (2025) की रिपोर्ट के अनुसार डीएवाई– एनआरएलएम (DAY & NRLM) ग्रामीण विकास मंत्रालय का गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम है, जो जून 2011 में शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य ग्रामीण गरीब परिवारों को स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से संगठित करना, जिससे वे बचत, ऋण सुविधा और आजीविका क्रियाकलापों के माध्यम से अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सकें। इन स्वयं सहायता समूहों को आगे ग्राम संगठनों से भी जोड़ा गया है, ताकि ग्रामीण स्तर पर सामुदायिक संस्थाएं मजबूत हो सकें। रिपोर्ट के माध्यम से यह भी पता चलता है कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं को वित्तीय साक्षरता, प्रशिक्षण, आय सृजन जैसी गतिविधियों से जोड़कर ग्रामीण जीवन स्तर सुधारने में योगदान दे रहे हैं। इसी सन्दर्भ में महादेव एस. टार्डल (2018) में अपने अध्ययन में बताते हैं कि स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं मनोवैज्ञानिक रुप से सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, साथ ही साथ स्वयं सहायता समूह महिलाओं में निर्णय क्षमता, बचत की आदत, ऋण तक पहुँच, आय सृजन गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी एवं आत्मविश्वास बढ़ाने में भी अहम भूमिका निभा रहे हैं। इसके साथ ही साथ स्वयं सहायता समूह न केवल आर्थिक सहायता का माध्यम है बल्कि ग्रामीण समुदायों के विकास, महिलाओं की सामाजिक भागीदारी व सशक्तिकरण का साधन भी हैं।

उद्यमिता एवं चुनौतियां– स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं में उद्यमिता की भावना विकसित करने, रोजगार शुरू करने, आय सृजन के नए अवसर देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, परंतु इसके साथ ही साथ कुछ चुनौतियां भी देखने को मिलती हैं, जैसे कि बाजार उपलब्ध न होना, प्रशिक्षण की कमी, समूह के सभी सदस्यों को प्रशिक्षण नहीं मिलना, वित्तीय साक्षरता की कमी, जरूरत के समय वित्तीय सहायता न मिल पाना आदि चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इस सन्दर्भ में मौमिता देवनाथ (2026) ने ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका का गुणात्मक अध्ययन किया है, जिसमें साक्षात्कार, सहभागी अवलोकन, एवं समूह से जुड़े सदस्यों के अनुभवों का विश्लेषण किया है। इस अध्ययन में बताया गया है कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं में बचत की आदत विकसित करने, आर्थिक स्थिति सुधारने, ऋण तक पंहुच तथा आजीविका गतिविधियों में भागीदारी बढ़ाने, महिलाओं में सामाजिक जागरूकता, आत्मनिर्भरता और परिवार व समुदाय स्तर पर भागीदारी बढ़ाने में सहायक है इसके साथ ही महिलाओं को कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें वित्तीय कौशल, बाजार तक पहुँच, संस्थागत सहयोग की कमी प्रमुख हैं। इसी सन्दर्भ में अल्का श्रीवास्तव (2005) ने अपने अध्ययन में चार राज्यों–बिहार, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं का अध्ययन किया है। अध्ययन में बताया है कि स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाएं सूक्ष्म वित्त गतिविधियों से जुड़कर परिवार की आर्थिक स्थिति में योगदान करने लगी हैं, जिससे उनकी घरेलू निर्णय लेने की क्षमता कुछ बढ़ी है। इस अध्ययन से यह भी पता चला कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं में सामाजिक जागरूकता, सामूहिक भागीदारी एवं स्थानीय सामाजिक समस्याओं से निपटने की क्षमता विकसित करने में सहायक हो सकते हैं।

अध्ययन की प्रकृति– प्रस्तुत अध्ययन में गुणात्मक एवं वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र एवं इकाई– प्रस्तुत अध्ययन सीतापुर जिले के रामपुर मथुरा विकासखंड में स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी ग्रामीण महिलाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन है।

अध्ययन की इकाइयां एवं अध्ययन विधि– इस अध्ययन में रामपुर मथुरा विकासखंड के अंतर्गत पांच (5) ग्राम पंचायतों के स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति के माध्यम से किया गया है।

डाटा संग्रह उपकरण– इस अध्ययन में प्राथमिक आंकड़ों के संग्रह के लिए प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है, जिसमें खुले एवं बंद दोनों प्रकार के प्रश्नों को शामिल किया गया है। इसके साथ ही साथ साक्षात्कार के माध्यम से समूह से जुड़ी महिलाओं के अनुभवों, विचारों, निर्णय क्षमता व सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनो की जानकारी प्राप्त की गई है।

डाटा विश्लेषण एवं निष्कर्ष– प्राप्त आंकड़ों को विषय पर आधारित गुणात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से विश्लेषित किया गया है। उत्तरदाताओं से प्राप्त अनुभवों, विचारों व कथनों को विषयों के आधार पर वर्गीकृत किया गया है एवं उसका समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया गया है।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

महिला सशक्तिकरण एवं सामाजिक परिवर्तन– इस सन्दर्भ में प्रस्तुत क्षेत्रीय अध्ययन में स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं से साक्षात्कार में यह ज्ञात हुआ, कि उनमें पूर्व की तुलना में आत्मविश्वास, सामाजिक कार्यों में सक्रिय भागीदारी एवं उनके बातचीत करने के तरीके में भी परिवर्तन हुआ है। आर्थिक लाभ प्राप्त हो रहा है, परंतु वह सभी महिलाओं को नहीं मिल पाता है, क्योंकि ज्यादातर महिलाओं में समूहों से मिलने वाले लाभों व कार्यप्रणाली की पर्याप्त जानकारी की कमी है।

आर्थिक विकास एवं आजीविका– इस सन्दर्भ में क्षेत्रीय अध्ययन से प्राप्त जानकारी के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि समूहों से जुड़ने के पश्चात अनेक महिलाओं को समूह सखी, बैंक सखी, स्वास्थ्य सखी आदि पदों पर काम करने का अवसर मिला, जिससे उन्हें मानदेय मिलता है और साथ ही महिलाओं को आजीविका सृजन गतिविधियों में भी सहयोग मिल रहा, हालांकि क्षेत्रीय अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि आर्थिक लाभ सभी सदस्यों तक समान रुप से नहीं पहुंचता, जिससे जिन महिलाओं को आर्थिक लाभ व आजीविका सृजन के अवसर नहीं मिल रहे। उनमें असंतोष देखने को मिल रहा, जिससे नियमित बैठकों में महिलाओं की उपस्थिति भी कम देखने को मिलती है, साथ ही आपसी मतभेद भी देखने को मिलते हैं ।

सामुदायिक विकास एवं सामाजिक पूंजी– इस सन्दर्भ में क्षेत्रीय अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि स्वयं सहायता समूह ग्रामीण समुदायों के विकास एवं सामाजिक पूंजी निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उत्तरदाताओं से यह जानकारी मिली कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात उनमें एकजुट होकर काम करने, आपसी सहयोग एवं विश्वास, सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित हुई है, साथ ही साथ वह ग्राम संगठनों की बैठकों में भी निःसंकोच अपनी बात रखने में सक्षम हुई है और सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभा रही, परंतु कुछ समूहों में यह भी स्पष्ट हुआ कि आर्थिक लाभ न मिलने के कारण सदस्यों की निष्क्रिय भागीदारी देखने को मिलती है, जिससे समूह को सक्रिय रखने और सफल बनाने में मुश्किल होती है।

उद्यमिता एवं चुनौतियां– इस सन्दर्भ में क्षेत्रीय अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं में उद्यमिता के विकास व उनकी क्षमताओं को पहचानने व विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समूहों के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भरता की उम्मीद की किरण मिली है, जिससे वे रोजगार सृजन, आय के नवीन अवसर व प्रशिक्षण मिलना, निर्णय क्षमता का विकास व बैंकिंग कार्यप्रणाली की समझ, ऋण तक पहुँच, संस्थागत सहयोग के माध्यम से सशक्त हुई हैं, हालांकि समूह से जुड़ी सभी महिलाओं को ये लाभ नहीं मिल पाते, क्योंकि जो महिलाएं अपने अधिकार के लिए खड़ी नहीं हो पाती हैं। उन्हें संस्थागत सहयोग नहीं मिल पाता, जिससे उन्हें रोजगार सृजन, लोन प्राप्त करने में मुश्किल आती है।

निष्कर्ष– प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक विकास के साथ ही साथ उनके आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता में वृद्धि, उनमें सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने, प्रशिक्षण देने, रोजगार सृजन के अवसर प्रदान करने, सामाजिक स्तर पर पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, परंतु यह विकास भी कुछ महिलाओं तक ही सीमित रह जाता है, जिससे सभी ग्रामीण महिलाओं का विकास पूरी तरह संभव नहीं हो पाता है, क्योंकि ज्यादातर महिलाओं में बचत की आदत, आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता का विकास तो देखने को मिलता है, परंतु सभी को प्रशिक्षण नहीं मिल पाता। वित्तीय सहायता की जानकारी का अभाव होता है, जो रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण चुनौतियां हैं, जो समान रूप से सभी महिलाओं का विकास करने में सक्षम नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Chambers, R. (1997). Whose reality counts? Putting the first last. Intermediate technology publications.
2. Debnath, M.(2016). Empowering rural woman through self-help groups: A qualitative Inquiry.international journal of social science and education research.8(3).233-237
3. Desai, A.& Joshi, A. (2013). Collective action and community development:Evidence from self-help groups in rural india.Indian journal of social work, 74(1),67-84
4. Dutta, B. (2015) rural development through self-help group (SHGs): An overview.IOSR journal of humanities and social science, 20 (7),67-72
5. Gurumoorthi, T. R(2008, february). Self-help group empower rural women.kurukshetra, 56(5), 28-32.
6. Kabeer, N.(1999).Resources, agency,achievements: reflections on the mesurment of women's empowerments.Development and change, 30(3).435-464.
7. Lahiri Dutta, K.and Samanta, G.(2006).constructing social capital:self-help groups and rural women's development in india.geographical research, 44(3),285-295.
8. National bank for agriculture and rural development.(2024).annual report 2023-2024.NABARD
9. Nicholas, J.(2021).self-help groups as plateform for development:the role of social capital.journal of rural studies, 85, 1-11.
10. Press information bureau.(2025, july,4).self-help groups and village organizations are strengthening rural development and women's empowerment. Government of India.
11. Roy,P. & Das, R.(2019).Evaluating self-help groups: a village level analysis.internation journal of social sciences, 6(2), 45-60.
12. Sahu, P.(2026).SHG:Harit Bharat ke nirman me sahbhagita.kurukshetra, 74(1),50-56.
13. Srivastava,A.(2005).women self-help groups: finding from a study in four Indian states.social change, 35(2)156-164.
14. Tardal,M.S.(2018).rural development in india: a role of self-help groups. Journal of emerging technologies and innovative research, 5(4), 220-226.

*****